1932–33 का अलवर तहरीक बनाम मेव किसान आंदोलन

डॉ. रूपा सिंह,

एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी),
बाबू षोभाराम राजकीय स्नातकोत्तर कला महाविद्यालय,
अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

किसान से खेती अपहृत कर ली जाये तो पूरी व्यवस्था भरभरा कर गिर पडेगी। भिखारी को भीख में अन्न नहीं मिलेगा। बनिये का वाणिज्य रूक जावेगा। नौकरिया मिलना बंद हो जावेगी मिली नौकरिया छूट जायेगी। दीजत हुये जीविकाविहीन लोग एक दूसरे से पूछेंगे कि कहां चला जाये, क्या किया जावे? यह भय और उचात की मनःस्थिति है। इस उजाड़ से बचने के लिए अधिकारी से लेकर भिखारी तक सबकों किसान के साथ आना होगा। किसान बचेंगे तो ये भी बचेंगे। किसान गई तो न व्यापार बचेगा न नौकरी।न धर्म रहेगा न ही धंधा। न भीख मिलेगी न षिक्षा। तब ज्ञानियो से लेकर श्रमिकों तक व्यापारियों से लेकर भिखारियों तक सभी को किसानी बचाने की लड़ाई लड़नी होगी। तुलसीदास का यह मंतव्य है। इसी मंतव्य की खातिर राजा हसन खां के महान् बलिदान के पष्चात् मेवों ने पहली बार एक जुट होकर संघर्ष किया और यह संघर्ष अलवर तहरीक, रियासत के किसानों के नाम प्रसिद्ध हुआ।

इतिहास पढ़ना और लिखना इसलिए जरूरी होता है कि मनुष्य अपने स्त्रोत की चेतना से अपने को आष्वस्त कर सके कि उसके जीवन में जो कुछ हो रहा है वह अप्रत्याषित नहीं है और नहीं निष्कर्ष विहीन है। अतीत में ऐसी घटनांए, दुर्घटनांए होती रहती है, जिनके ज्ञान से हम अपने वर्तमान की राह खोज सकते है और सुदृढ़ भविष्य निर्मित कर सकते है। इसी प्रकार इतिहास का एक और मुख्य उपादान है कि वह नियतिवाद पर भी कड़े प्रहार करता है। इससे ज्ञात होता है कि इंसान की जीत हाथ पर हाथ धरे रहने से नहीं किसी महापुरूष के इंतजार में नहीं, बल्कि समवेत रूप से महाबली बनने से संभव हुई है। हमें यह जानना आवष्यक है कि हम जहां रहते है, जिन स्थितियों, वस्तुओं, घटनाओं का हमारे बीच उपादेयता है, अतीत में वे कैसी थी? और जो बड़ी घटनाएं घटीं या क्रांति हुई इसके पीछे की छोटी–छोटी श्रृंखलाएं कैसी थी?

क्रांति रातो–रात नहीं हो जाती। सन सत्तावन के गदर से पूर्व अनेक ऐसी छोटी–मोटी क्रांतियां हुई, जिनका न इतिहास में जिक्र है और न हीं कहीं उल्लेख। लेकिन इन छोटी तहरीकों से दनकी चिंगारियों से कितनी बड़ी हलचल हुंई, माहौल बना, पृष्ठभूमि तैयार हुई, जिसमें सन सत्तावन का गदर इतिहास ग्रंथों में न केवल दर्ज हुआ, बल्कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम की पूर्व पीठिका हाथ से तैयार हुई।

जैसा कि इंगित किया गया है कि एक बडी सफलता के पीछे कई छोटी–छोटी सफलताओं का राज छुपा होता है। एक बड़ी क्रांति कई छोटे–छोटे संघर्षों और जागरूकता का परिणाम होती है। इस संदर्भ में स्वतंत्रता पूर्व की एक महत्वपूर्ण घटना 1932–33 में मेवों द्वारा अलवर के राजा जयसिंह को ललकारना और महाराजा द्वारा मेवात के भोले–भोले किसानों पर किए तथा शौषित कौम ने एक साधन सम्पन्न,

अत्याचारी राजा को उसकी औकात दिखा दी थी।

राजा हसन खां के महान बलिदान के पष्चात् मेवों ने पहली बार एकजुट होकर संघर्ष किया और यह संघर्ष अलवर तहरीक के नाम से मषहूर हुआ। अलवर तहरीक, रियासत के किसानों द्वारा 1932–33 में महाराजा सवाई जयसिंह के खिलाफ उस समय चलाया गया जब उसने मालगुजारी कई गुना बढ़ा दी और कई टैक्स गरीब किसानों पर लगा दिये। आज की तिथि में किसी की आत्महत्या एक गंभीर मुद्दा बन गया है। यह। गौरतलब है कि तब उन किसानों ने हार नहीं मानी, न ही आत्महत्या की और ना ही वे आत्महत्या की ओर मुड़े। सब ने समवेत रूप से एकजुट होकर संघर्ष का रास्ता चुना और अलवर तहरीक के माध्यम से जुल्मों का खात्मा किया।

इतिहास सबक का सबब बन सकता है। इसलिए इतिहास के पन्नों में दर्ज होने से छूट गई इस घटना को सबब के रूप में, पुर्नपाठ के रूप में महत्व दिया जाना चाहिए। महाराज अलवर सवाई जयसिंह जी थे जो जाति से क्षत्रीय और नरूका राजपूत थे। मेवों ने अलवर रियासत की स्थापना में राजपूतों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया था। इसलिए उनके आपस के संबंध बड़े मधुर थे। इसी कारण मेवात के कई क्षेत्र मालगुजारी से भी मुक्त थे। मगर बाद में भरतपुर रियासत के जाट राजा बृजेन्द्र सिंह के साथ अनबन होने के कारण रिष्तों में खटाई आ गई। फिर तो झगड़े बढ़ते गए और न केवल मेव कमजोर हुए बल्कि दोनों रियासतों के राजाओं को भी काफी परेषानियों का सामना करना पड़ा।

अलवर की रियासत के साथ मेवों का पहला मुकाबला महाराज बख्तावर सिंह के कारण हुआ। जिन्होंने इन्दौर के किले पर अचानक आक्रमण कर दिया था और इस किले को मेवों से छीनकर अपने अधिकार में ले लिया था। इसी बार सन् 1806 में कोलानी गांव के मेवों ने रिसालदार बीनाबेग भोपालसिंह तथा सिपहसालार हाथीसिंह को हरा दिया। यहां जीत तो हासिल हुई, लेकिन कई वीर मृत्यु–गति को प्राप्त हुए। जिनमें वीर धनसिंह भोपाल सिंह थे। बीना बेग बुरी तरह घायल हुए।

1838 में महाराजा के शासन काल में गांव कोलानी और नीकच के मेवों के साथ रियासती फौज का फिर टकराव हुआ, लेकिन चतुराई से इस विरोध को दबा दिया गया। इसका नतीजा यह निकला कि चिंगारी दबी रह गई। सन् 1932 से महाराजा सवाई जयसिंह ने अचानक मालगुजारी चार गुणा बढ़ा दी। बार–बार आक्रमणों के षिकार रियासत के किसान जो पहले ही शोषण के षिकार थे, इस बात से भड़क उठे। रियासत की जनता में अषांति फैल गई तथा जनता राजा की फिजूलखर्ची और अपने शोषण के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। चिराग ए मेवात में सद्दीक अहमद मेव इसका खुलासा करते हुए लिखते है कि हाथी टैक्स तथा नौकर टैक्स पहले ही लगे हुए थे, इसके बाद पषुओं पर छपावाई टैक्स लगा दिया गया। लोगों से जबरदस्ती बेगार करवायी जाती थी। इसके अतिरिक्त महाराज की केन्द्रीय ऐषगाह भी ऐसे प्रलोभन थे। जिनसे जनता के विकास की कौन कहे, पूरा राज्य पराभव की ओर जा रहा था।

छरअसल यह सारा प्रलोभन एक विषेष प्रकार की मादक षिकार की आदतों का था। महाराजा सवाई जयसिंह को सूअर के षिकार का शौक था। इस शौक की वजह से जंगलों में असंख्य सूअर पाले जाते थे। जो किसानों की फसलोंको बर्बाद कर देते थे। इसके अतिरिक्त खेतों पर मेड़ बांधना मना था। जिनसे सूअरों के भ्रमण में कोई दिक्कत न आने पाये। सद्दीक अहमद ने लिखा है कि चूंकि वह मेहमानदारी का भी गजब शौकीन था। इसलिये अंग्रेजों को निमंत्रण देकर बुलाता रहता था और उनके

सत्कार में पैसे पानी की तरह खर्च करता था। खूबसूरत अलवर और उसमें पाले गये सूअरों के षिकार का वह उन्हें आये दिन निमंत्रण देता था।

चाटूकारों की भीड़ ने उसके सोचने–समझने की शक्ति झीण कर दी थी। वह धीरे–धीरे कई फिरकापरस्त संघों, सभाओं में भी पैसा लुटाने लगा। और उनका अध्यक्ष बनकर झूंठे सम्मान की चाह करने लगा। आम जनता सब देख, सुन और सह रही थी। बढ़ते खर्चे और तानाषाही के इन हालातों ने जब जनता पर मालगुजारी देने का ठप्पा लगाया तो जनता ने बगावत कर दी। जब रियासत के कर्मचारियों ने जर्बदस्ती उपाही करनी चाही तो लोगों ने उनकी पिटाई कर दी। कस्बों में मालगुजारी के विरोध में प्रदर्षन होने शुरू हुए और यह आग दूर–दूर तक इनती फैली की महाराज सवाई जयसिंह इन सबसे परेषान हो गया।

महाराज जो काफी हद तक प्रतिरोधों का सपना कर रहा था, उसने जनता को विष्वास में न होने का यत्न करते हुए मूर्खतापूर्ण कदम उठाया। उसने आसपास के गांवों से गैर मेव किसानों को उकसाना प्रारंभ करवाया था तथा इनसे मेवों पर हमला करवा कर उनके आंदोलन को कुचलवाने का प्रयास किया। नाकामयाब होना ही था। मेवों ने और भी अधिक क्रोधित होकर प्रतिआक्रमण में अहीरों के सात गांवों को जलाकर राख कर दिया। अब सांप्रदायिकता का नया रंग प्रयोग के लिये सामने लाया गया। इसने एक तीसरी क्रांति का स्वर वातावरण में गुजांयमान कर दिया। बी.एल.पनगड़िया कहते है कि महाराजा अलवर की फिरकापरस्ती सोच ने मेवों एवं अहीरों के बीच सदियों से कायम भाईचारें को समाप्त कर दिया। जिसकी कीमत मेवों कों 1947 में चुकानी पडी।

महाराजा बराबर शक्ति का प्रदर्षन कर रहा था, लेकिन उसे उतनी ही तीव्र प्रतिक्रिया भी झेलनी पड़ रही थी। तिजारा एवं किषनगढ़ के पहाड़ी क्षेत्रों के लोग सैनिक दृष्टि से अच्छी स्थिति में थे, लेकिन गोविंदगढ़ जैसे पिछडे क्षेत्र में स्थिति अच्छी नहीं थी। इसी गोविन्दगढ़ में मेवों की एक पंचायत हो रही थी। यह पंचायत इसलिये थी कि तहरीक के लिए चंदा उगाही के तौर–तरीकों पर विचार–विमर्ष हो, अचानक महाराज के रियासती फौज ने उन्हें चारों और से घेर लिया और जनरल डायर की तरह अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। सैकड़ों मेवातियो को मौत की नींद में सुला दिया गया। इस घटना से पूरे देष में सनसनी फैल गई। केन्द्रीय सरकार को हरकत में आना पड़ा। सरकारी फौजी दस्ते तुरंत अलवर पहुच गये तथा महाराजा के सारे अधिकार छीन लिये गये। एक अंग्रेज सैक्रेट्री, जो केन्द्रीय सचिवालय से फौज के साथ आया था, रियासत का प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया गया। महाराजा सवाई जयसिंह को देष–निकाला दे दिया गया, कुछ दिनों बाद देष के बाहर उनका निधन हो गया। इस तहरीक के बाद मेवों ने सुसंगठित कांग्रेस ज्वाइन कर लिया और उन्होंने आजादी की लड़ाई में बढ़चढ़कर भाग लिया।

स्वर्णिम इतिहास तो सबों की नजर में आता है, लेकिन जिन स्वर्ण किरणों से चुन–चुनकर उसका प्रभामंडल तैयार हुआ हमें उन रष्मियों को एकत्रीकरण करने का हुनर आना चाहिए और यह हुनर हमें अपना इतिहास देता है। इस रूप में सत्तावन के गद्र के पष्चात् अलवर तहरीक की यह घटना वह स्वर्ण–रष्मि ही है, जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता।

1. मेवाती का उद्भव और विकास–डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा, लोकभाषा प्रकाशन कोटपूतली (राज. 1977, पृ.सं. 135)
2. मेवात एक खोज–सिद्दिक अहमद मेव प्रकाषन–दोहा, तालीम समिति, दोहा प्रथम संस्करण (अप्रैल 1977, पृसं 353)
3. मेवात एक खोज–सिद्दिक अहमद मेव, प्रकाषक –दोहा तालीम समिति, दोहा प्रथम संस्करण (अप्रैल, 1997, पृसं.355)
4. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम–बी.एल. पनगड़िया–राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, बागहवां संस्करण(2008, पृसं.99)